महानिदेशक का संदेश

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् दक्षिण एशिया में वानिकी के क्षेत्र में एक प्रमुख अनुसंधान संगठन है । परिषद् इस बात के प्रति सतर्क है कि आज वानिकी अनुसंधान की आवश्यकता उत्पादन से हटकर संरक्षण एवं समुदाय आवश्यकता आधारित वानिकी अनुसंधान पर केन्द्रित हो गयी है । भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् में अब ऐसी प्रौद्योगिकियों के विकास और अनुसंधान करने पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जो भारत की वन नीति के अनुरूप और वनों में तथा इसके आस–पास निवास कर रहे लोगों के लिए लाभदायक हैं ।

1986 में अपने प्रारंभ से परिषद् ने वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के क्षेत्र में विशेषज्ञता विकसित कर ली है । वर्ष 2000–2001 में परिषद् ने रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम, मॉडल पौधशालाओं के विकास, वृक्षों के क्लोनीय प्रवर्धन एवं आनुवंशिक सुधार के अन्तर्गत नवीन अनुसंधान परियोजनाएं शुरू की हैं। राष्ट्रीय, राज्य और संस्थान स्तर पर वानिकी अनुसंधान के समन्वयन पर मुख्य ध्यान दिया गया है।

राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान योजना तैयार की गई। इसे माननीय, पर्यावरण एवं वन मंत्री, भारत सरकार द्वारा जारी किया गया। इसे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रसंशा मिली है ।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों के साथ सहयोग कर रही है ।

राज्य वन विभागों एवं निजी संगठनों के साथ सहानुबन्धों का विकास करके वानिकी विस्तार पर अत्यधिक जोर दिया गया है । प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों को पुनरअभिकल्पित किया गया और इन्हें गुणवत्ता पौध उत्पादन, पौधशाला प्रबन्ध, क्लोनीय प्रवर्धन तकनीकी, सहभागी कृषि वानिकी, आनुवंशिक वृक्ष सुधार आदि पर जोर देकर ज्यादा सहभागी बनाया गया ।

परिषद् ने विभिन्न स्तरों पर कार्यरत वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों की, प्रतिष्ठित अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संस्थानों में प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी योग्यताएं बढ़ाकर, क्षमता विकसित करने के लिए आन्तरिक अभ्यास शुरू किया है । शोधार्थियों एवं वैज्ञानिकों के कार्य समृद्धिकरण के लिए विशेषीकृत प्रशिक्षण देने पर जोर दिया गया है ।

फॉरेस्ट्री स्टैटिस्टिक्स इंडिया–2000 प्रकाशित किया गया और प्रत्येक संस्थान ने मोनोलॉग, विवरणिकाओं एवं पुस्तिकाओं की श्रृंखलाएं प्रकाशित की हैं, जिन्हें स्थानीय भाषा में उपभोक्ता संगठनों और यहां तक कि व्यक्तियों में प्रसारित किया जा रहा है ।

वानिकी शिक्षा के अन्तर्गत, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून में सम–विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे पीएच. डी. कार्यक्रम एवं विभिन्न स्नातकोत्तर डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम ने वानिकी व्यावसायिकों की नयी नसल दी है, जो विभिन्न संगठनों और स्वयंसेवी संस्थाओं में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं। संशोधित एम.एससी. वानिकी पाठ्यक्रम तैयार करके कार्यान्वयन के लिए वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले सभी राज्य कृषि विश्वविद्यालयों में प्रचालित किया गया । वर्ष 2000–2001 के दौरान चालीस विद्यार्थियों को पीएच.डी. प्रदान की गई। वन संसाधनों के सतत् उपयोग के संबंध में विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लिए पाठ्यक्रम भी विकसित किया गया ।

भारतीय वानिकी अनुसंधान कार्यान्वयन प्रणाली पर्यावेक्षण में है और प्रमुख मापांकों का परीक्षण किया गया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् के सभी संस्थानों में वित्तीय लेखा प्रणाली कार्यान्वित की गई। अब सूचना प्रौद्योगिकी नेटवर्क और लान पूरी तरह से कार्य कर रहे हैं ।

मैं इस परिषद् के वानिकों, वैज्ञानिकों एवं सभी सदस्यों का आभारी हूं, जो देश में वानिकी अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए परिषद् के अधिदेश को पूर्ण करने हेतु कड़ी मेहनत कर रहे हैं ।

(रविन्द्रपाल सिंह कटवाल)
महानिदेशक
देहरादून भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

विषय वस्तु

		पृष्ट संख्या
1.	प्रस्तावना	i
2.	परिषद् की प्रमुख उपलब्धियां	xxiii
3.	वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून	1
4.	वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर	33
5.	काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी संस्थान, बंगलौर	53
6.	उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर	71
7.	वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट	85
8.	शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर	97
9.	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थाान,शिमला	109
10.	वन उत्पादकता संस्थान, रांची	117
11.	सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुर्नस्थापन केन्द्र, इलाहाबाद	123
12.	वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिंदवाड़ा	129
13.	वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद	133
14.	भा.वा.अ.शि.प. द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियां	135
15.	परीक्षित वार्षिक लेखा	137
16.	शब्द संक्षेप सूची	167

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् का संगठनात्मक चार्ट 01-10-2001